हड़प्पा सभ्यता की पारिस्थितिकीय अवनति -

मार्टिमर व्हीलर ने आर्य आक्रमण कहा। इन्द्र को दोषी कहा। मोहनजोदड़ो से 26 नरकंकाल प्राप्त किया। जिन पर तेज पैने अस्त्रों के घाव हैं। हड़प्पा की कब्रगाह का साक्ष्य। ऋग्वेद में 'हरियूपिया' तथा इन्द्र को पुरंदर कहने से।

परन्तु इसका खण्डन किया गया है। हड़प्पा के पतन एवं आर्यों के आगमन में 300 से 400 वर्षों का अन्तर है। — ऐसा लगता है कि मार्टिमर व्हीलर आर्य आक्रमण की अवधारणा के माध्यम से ब्रिटिश आक्रमण का औचित्य सिद्ध करना चाहते थे।

इन सभी कारणों से पतन की बहस पर्यावरणीय कारकों की तरफ मुड़ गयी।

जान मार्शल — मोहनजोदड़ो के विभिन्न स्तरों से बाढ़ के साक्ष्य।

एस. आर. राव — लोथल से बाढ़ का प्रमाण।
मैके — चन्हूदड़ो भी बाढ़ से नष्ट हुआ — यहाँ से प्राप्त संस्कृति की तीनों परतें

एम॰ आर॰ साहनी — सामान्य बाढ़ नहीं बल्कि जल उत्प्लावन। इसके लिए विवर्तनिक विक्षोभ को उत्तरदायी मानते हैं। इसके कारण भूमि ऊपर उठ गयी। मोहनजोदड़ो में जल अवरुद्ध हो गया। आर॰ एल॰ राइक्स ने इसकी पुष्टि की है। परन्तु टी॰ एच॰ लैम्ब्रीक सहमत नहीं है। उनके अनुसार अवरोध के बावजूद जल अपना मार्ग स्वयं बना लेता।

टी०एच०लैम्ब्रीक – सिंधु नदी के मार्ग परिवर्तन से मोहनजोदड़ो का विनाश हुआ। घग्घर के सूख जाने से कालीबंगा का विनाश हुआ। पहले सतलुज नदी और यमुना, घग्घर की सहायक नदियाँ थी। किन्तु आगे सतलुज, सिन्धु की ओर मुड़ गयी और यमुना गंगा की सहायक बन गयी। अतः घग्घर का प्रवाह तेज कमजोर पड़ गया।

विष्णु मित्र, गुरदीप सिंह – जल की कमी। हड़प्पा के पतन के लिए प्रकृति में मानवीय हस्तक्षेप तथा अत्यधिक खपत को उत्तरदायी मानते हैं। उन्होंने जयपुर के हिस्सेारा गाँव का उदाहरण दिया है। प्रकृति में मानवीय हस्तक्षेप से जलवायु नष्ट हो गयी। (सांभर और डिडवाना)

गुरदीप सिंह ने राजस्थान में सांभर, डिडवाना, पुष्कर झील से पता लगाया की इन क्षेत्रों में वर्षा की मात्रा कम होते जा रही थी।

डी०के० चक्रवर्ती – नगरीय क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के बीच संतुलन का बिगड़ जाना। ग्रामीण शिकारी, संग्रहकर्ता ने नगरीय सभ्यता को निगल लिया।

जनसंख्या वृद्धि के कारण उस प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव पड़ा। इसके कारण शहर की जनसंख्या का पलायन संसाधन की खोज के लिए दूसरे क्षेत्रों में हुआ। जैसे गुजरात में अचानक से जनसंख्या में बढ़ोतरी के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

यह पतन की प्रक्रिया विनाश की ओर नहीं अपितु शहरीकरण के ह्रास की ओर संकेत करती है।

→ 2019 में कैम्ब्रिज वि०वि० की यामा दीक्षित ने हरियाणा की कोटला डहर झील में जैविक पदार्थों के रेडियो कार्बन विधि से अध्ययन कर यह पाया कि 2200-2000 ई०पू० लगभग 200 वर्षों की अवधि तक मानसून कमजोर रहा। जिससे सभ्यता के पतन [illegible]

Scanned with CamScanner